सर्वात्मा भगवान शिव का पूजन-वन्दन

सिद्धयोग पथ पर अध्ययन किए जाने वाले शास्त्रों से उद्धरण

आप समस्त रूपाकारों में विद्यमान हैं
और समस्त रूपाकारों से परे हैं
परमार्थसार, श्लोक १

हे शम्भु! मैं केवल आपकी शरण लेता हूँ — आप, जो माया से परे हैं, विश्वोत्तीर्ण हैं, अनादि हैं, एकमेव हैं, असंख्य रूपों में सभी प्राणियों में विद्यमान हैं, सभी के आश्रय हैं, और विश्वमय हैं यानी समस्त जड़ व चेतन सृष्टि में व्याप्त हैं।

देबब्रत सेनशर्मा द्वारा अुवादित, *Paramarthasara of Abhinavagupta: The Essence of the Supreme Truth* [नई दिल्ली : मुक्तबोध® भारतीय प्राच्य विद्या शोध संस्थान, २००७] पृ २।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।